रंगों की बौछार

कैसा सुन्दर रंग बिरंगा, होली का त्यौहार
रंग प्यार के रूहानी, रंगों का होता वार
रंग सकता कोई भी किसको, सबको है अधिकार
करते बाबा आज वतन से, रंगों की बौछार

रंग लगा पक्का गहरा, जुड़ गई प्रभू से तार
दृष्टि की पिचकारी सबका, करती है सत्कार
परमात्म प्यार के रंग अभी, करवाते साक्षात्कार
करते बाबा आज वतन से, रंगों की बौछार

बन गये होली डबल हम, बदल गया व्यवहार
उत्साह का उत्सव के रूप में, चलता यादगार
कॉपी की भक्तों ने आपकी, भक्त भी होंशियार
करते बाबा आज वतन से, रंगों की बौछार

देखो बाबा खड़े वतन में, इमर्ज हैं परिवार
रंग बिरंगे फूल गले में, डाल रहे हैं हार
रंग वतन के लाते सबके, चेहरे पर निखार
करते बाबा आज वतन से, रंगों की बौछार

बीत गई होली सो होली, नहीं व्यर्थ का भार
मर गया रावण जल गये, पांचों ही विकार
इक्किस जन्म की पवित्रता का, मिल रहा उपहार
करते बाबा आज वतन से, रंगों की बौछार

बीके सत्यनारायण भाई
मधुबन (ज्ञान सरोवर)